BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 3, Issue 2, April-June, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

''छात्र–छात्राओं का पुस्तकालय सेवाओं व सुविधाओं के प्रति दृष्टिकोण, जौनसार बावर के सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय (पी0जी0) कॉलेज साहिया के पुस्तकालय का विशेष अध्ययन''

पूनम चौहान
सहायक प्राध्यापिका बी0लिब0
एस0 एम0 आर0 जनजातीय (पी0जी0) कॉलेज साहिया, देहरादून

सार :–

शोधकर्ता के अनुसार उत्तराखण्ड के देहरादून जिले में स्थित एस0 एम0 आर0 जनजातीय पी0जी0 कॉलेज शैक्षणिक संस्थान पुस्तकालय में छात्रों के विशेष अध्ययन पर शोध कार्य किया गया है। शोधकर्ता द्वारा यह जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की गई कि छात्रों का पुस्तकालय के प्रति वर्तमान में क्या रुझान देखने को मिलता है क्योंकि महाविद्यालय पुस्तकालय एक दुर्गम क्षेत्र पर होने के कारण भी छात्र – छात्राएं इसका अपने अध्ययन क्षेत्र में कितना उपयोग कर रहे हैं और पुस्तकालय की स्थिति किस प्रकार है। छात्रों की पुस्तकालय में संख्याए पुस्तकालय द्वारा छात्रों को पुस्तकालय सेवाएं उपलब्ध करवाना इत्यादि।

मुख्य शब्द – दृष्टिकोण, पुस्तकालय सेवाएं, स्थिति, पुस्तकालय में छात्रों की संख्या, जौनसार दुर्गम क्षेत्र।

प्रस्तावना – लाइब्रेरी शब्द जिसका हिन्दी अर्थ पुस्तकालय होता है लैटिन भाषा के Libraria शब्द से खराब करके (बिगड़कर) बना है इसका शाब्दिक अर्थ पुस्तकों का घर (आलय या निवास) होता है।वह जगह जहां पर पुस्तकें तथा अन्य पाठ्य सामग्री रखी जाती है। पुस्तकें तो अन्य स्थानों पर भी जमा की जाती है उदाहरण के लिए प्रकाशन के यहां या बाजारों में दुकानों पर किन्तु वह पुस्तकालय नहीं कहलाते क्योंकि पुस्तकालय वह स्थान है जहां पुस्तकें पढ़ने के लिए संगृहीत की जाती है इसका उचित अर्थ यह है कि पुस्तकालय वह स्थान है जहां ग्रंथों को पढ़ने के लिए संगृहीत किये जाते हैं पुस्तकालय वह स्थान है जहां पुस्तकों, पत्र – पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, संदर्भ सामग्री और अन्य अध्ययन संसाधनों का संग्रह होता है। यह एक सामाजिक संस्था है जो निरंतर समाज कल्याण में रत रहते हुए ज्ञानी तथा अज्ञानी को समान रूप से ज्ञान वितरित करता है। भारत में विद्या दान सभी दानों में श्रेष्ठ माना जाता है विद्या का श्रेष्ठ दान पुस्तकालय ही प्रदान कर पाते हैं। पुस्तकालय सभी लोगों को आजीवन स्वशिक्षा प्राप्त करने में मददगार होते हैं । कोई भी व्यक्ति किसी भी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में आजीवन शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते हैं परन्तु पुस्तकालय एक मात्र ऐसा माध्यम है जहां जीवन भर ज्ञान – वर्धन कर सकते हैं। पुस्तकालय स्त्री – पुरूष, बच्चे यहां तक कि वृद्ध व्यक्तियों तक को भी बिना शिक्षक के एक शैक्षिक के समान ज्ञान प्रदान करता है। "पुस्तकालय अपने – आप में एक शिक्षक भी है।"

पुस्तकालय मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। पुस्तकालय ज्ञान का भण्डार होता है। पुस्तकालय अध्ययन की आदत को बढ़ावा देता है। और व्यक्तित्व विकास में मददगार सिद्ध होते हैं। पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है जहां शांति और एकाग्रता का वातावरण प्राप्त होता है जो अथाह अध्ययन के लिए आवश्यक है आज का युग डिजिटल होने के कारण भी पुस्तकालयों का महत्व कम नहीं हुआ है पुस्तकालय आज ज्ञान संसाधनों के साथ–साथ डिजिटल सामग्रियों का भी भण्डारण कर रहे हैं। अध्ययन की आवश्यकता एवं उद्देश्य जौनसार – बावर क्षेत्र सामाजिक और शैक्षिक रूप से एक अति संवेदनशील क्षेत्र है। यहां जनजातीय आबादी को उच्च शिक्षा और आधुनिक सूचना संसाधनों तक पहुंच की चुनौतियां हैं।इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए है ताकि यह जाना जा सकें कि कॉलेज पुस्तकालय की सेवाएं और सुविधाएं छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर पा रही हैं या नहीं।

@2025 Bihar Shodh Samaagam

उद्देश्य–

1– जौनसार – बावर क्षेत्र में पुस्तकालय सेवाओं की स्थिति का अध्ययन करना।

2 – छात्र –छात्राओं के दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना।

साहित्य समीक्षा –

1– डॉ0 एस0 आर0 रंगनाथन (1931) – ने पुस्तकालय विज्ञान के पांच नियम इस प्रकार प्रतिपादित किए हैं –

1– पुस्तकें उपयोग के लिए है– पुस्तकें केवल संग्रह के लिए नहीं, बल्कि उपयोग के लिए होती है।

2– प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिलें – हर पाठक को उसकी आवश्यकतानुसार पुस्तक प्राप्त होनी चाहिए।

3 – प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिलें– प्रत्येक पुस्तक के लिए कोई न कोई पाठक होता है, उसे पुस्तक तक पहुंचाना चाहिए।

4 – पाठक का समय बचाओ – पाठकों का समय बचाना पुस्तकालय कर्मचारियों का कर्तव्य है पाठकों को शीघ्रता से कर्मचारियों द्वारा जानकारी उपलब्ध करवानी चाहिए।

5 – पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है – पुस्तकालय को समय के साथ–साथ बढते रहना चाहिए – जैसे– सूचना, स्रोतों, तकनीक और सेवाओं के स्तर पर। [1]

2– ओम प्रकाश सैनी (1999) – आधुनिक पुस्तकालय ज्ञान एवं सूचनाप्रद पाठ्य सामग्री का अर्जन कर उसे व्यवस्थित करते हैं । इस सामग्री का संरक्षण करने की अपेक्षा उपभोक्ताओं को उपयोग के लिए उपलब्ध कराते हैं। यह पुस्तकालय संभावित पाठकों को नियमित रूप से पुस्तकालय में जाने वाला बनाते हैं जो स्वभावत, पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। [2]

3 – डॉ0 राजकुमार वर्मा (2025) – पुस्तकालय सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक अभिलेखों के संरक्षक हैं। वे पुस्तकों, पाण्डुलिपियों, तस्वीरों और डिजिटल मीडिया सहित विविध प्रकार की सामग्रियों को संरक्षित रखते हैं।यह सुनिश्चित करते हुए कि ज्ञान भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रहें । यह संरक्षण भूमिका संग्रह की भौतिक स्थिति को बनाए रखने और डिजिटल जानकारी को ऐसे प्रारुपों में संग्रहित करने तक फैली हुई है जो समय के साथ सहज रहेगी। [3]

4 – डॉ0 पाण्डेय एस0के0 शर्मा (2007) – मुस्कुराहट तथा मीठी वाणी में कीमत नहीं लगती परंतु इनसे लोगों को जीता जा सकता है पुस्तकालयाध्यक्ष को मृदुभाषी होना चाहिए। इससे लोगों की पुस्तकालय में रूचि बढ़ती है तथा वे पुस्तकालय कर्मचारियों का समान करते हैं। पुस्तकालय में विभिन्न प्रकृति के लोग आते हैं अतः पुस्तकालयाध्यक्ष को व्यवहार कुशल भी होना चाहिए। उसकी सेवा जनक नम्रता में शैक्षिक स्वाभिमान और व्यवहार कुशलता मिश्रित होनी चाहिए। [4]

5– विल्सन एवं टाबर के अनुसार–पुस्तकालय संगठन का कार्य एक मशीन माना है जिससे पुस्तकालय के कार्यों में तीव्रता लाई जाती है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालय का कार्य उतना सरल नहीं है जितना पहले था अर्थात आज ग्रंथालयी का केवल विद्वान होना ही पर्याप्त नहीं है अपितु उसे ग्रंथालयित्व के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। किसी भी प्रकार के ग्रन्थालय में गति लाने हेतु उसमें सक्षम संगठन का होना अति आवश्यक है। [5]

शोध अध्ययन क्षेत्र – यह अध्ययन उत्तराखण्ड के देहरादून जिले में स्थित शैक्षणिक संस्थान सरदार महिपाल राजेन्द्र जनजातीय पी0जी0 कॉलेज साहिया के अंतर्गत किया गया है। यह जनजातीय क्षेत्र जौनसार– बावर में स्थित एक प्रतिष्ठित उच्च शिक्षा संस्थान है। यह महाविद्यालय विशेष रूप से जनजातीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है।

यह क्षेत्र देहरादून से लगभग 66 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक दुर्गम क्षेत्र है। यह स्थान कालसी तहसील में आता है। साहिया चारों तरफ सुन्दर पहाड़ियों से घिरा हुआ है। इसका प्राकृतिक सौंदर्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने

में मजबूर कर देता है। इसके समस्त क्रियाकलाप प्रकृति पर ही निर्भर होते हैं यहां कि विशेष भौगोलिक स्थिति, जलवायु एवं ऋतु चक्रों से निर्धारित एवं नियंत्रित होती है। यहां का लोकजीवन अधिकतर कृषि पर निर्भर है। महाविद्यालय के समीप अमलावा नदी स्थित है। जो यहां के दृश्य को अधिक नैसर्गिक सौन्दर्यपूर्ण बनाने के साथ–साथ वातावरण को भी ठंडा रखती है।

इस महाविद्यालय की स्थापना सन् 2017 में अधिक वर्षों के संघर्षों के उपरान्त पूर्ण हुई इस महाविद्यालय स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य उच्च शिक्षा से वंचित जनजातीय छात्र –छात्राओं एवं आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को शिक्षा प्रदान करना है।जो शहरों में जाकर उच्च शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ होते हैं।

महाविद्यालय में कला एवं विज्ञान वर्ग के विभिन्न विषयों में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। यह महाविद्यालय श्री देव सुमन विश्वविद्यालय से सम्बंध है। यहां का शैक्षणिक वातावरण अनुशासित एवं शिक्षण अधिगम के लिए अनुकूल है। वर्तमान समय में इस महाविद्यालय में कुल 500 छात्र – छात्राएं अध्ययनरत हैं।यह महाविद्यालय साहिया के मध्य केंद्र में स्थित होने के कारण स्थानीय एवं इसके समीप गांवों के बच्चों का मुख्य शैक्षणिक केंद्र बिंदु हैं।

महाविद्यालय का पुस्तकालय विद्यार्थियों, शिक्षकों और अन्य पाठकों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान है। "पुस्तकालय किसी भी शिक्षण संस्था का ह्रदय होता है।"

यहां प्रत्येक विषय से संबंधित पुस्तकें,पत्र –पत्रिकाएं, समाचार पत्र एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु उपयोगी पाठ्य सामग्री उपलब्ध है। पुस्तकालय शान्त एवं अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है यहां डिजिटल संसाधनों की सुविधाएं भी हैं जिससे छात्रों को ऑनलाइन स्रोतों से ज्ञान मिलता है हमारे महाविद्यालय का पुस्तकालय न केवल शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है परन्तु यह एक ऐसा स्थान है जहां छात्र ज्ञान के समंदर में गोता लगाते हैं और अपने भविष्य को संवारने के लिए आवश्यक पाठ्य – सामग्री प्राप्त करते हैं।

शोध प्रारुप – प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं का पुस्तकालय सेवाओं व सुविधाओं के प्रति दृष्टिकोण को जानना है। यह अध्ययन विशेष रूप से दुर्गम ग्रामीण क्षेत्र का है अध्ययन में वर्णनात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून जिले के साहिया क्षेत्र के 500 छात्रों का उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के आधार पर चयन किया है।

तत्पश्चात साक्षात्कार अनुसूची द्वारा छात्रों से जानकारी प्राप्त कर प्राप्त आंकडों की विवेचना की गई है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून जिले के साहिया में स्थित एस0 एम0 आर0 जनजातीय पी0जी0 कॉलेज के कुल 500 छात्र–छात्राओं का उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि के आधार पर चयन किया गया।

प्राथमिक आंकडों के संकलन के लिए उत्तरदाताओं से असूचनाएं साक्षात्कार अनुसूची ओर अवलोकन विधि के द्वारा संग्रहित की गई हैं। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का वैज्ञानिक विधियों से विश्लेषण द्वारा वैध एवं विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त कर अध्ययन विषय की अर्थपूर्ण व्याख्या की गई है।

उपलब्धियां –4

सारणी संख्या –01

छात्रों के पुस्तकालय आने के सन्दर्भ में

क्र. स.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	दैनिक	19	7.6

2	साप्ताहिक	20	08
3	हर 2 सप्ताह	87	34.8
4	मासिक	80	32
5	हर 3 महीने	44	17.6
	कुल योग	**250**	**100**

सारणी संख्या 01 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कुल 250 उत्तरदाताओं में से दैनिक रुप से 7.6% साप्ताहिक रूप से 8% हर दो सप्ताह में 34.8% मासिक रुप से 32% और हर 3 महीने में 17.6% सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता हर 2 सप्ताह में पुस्तकालय में आते हैं।

सारणी संख्या – 02

पुस्तकालय का उपयोग किन उद्देश्य से करने के संदर्भ में

क्र. स.	**विवरण**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	पाठ्यक्रम के लिए	90	36
2	प्रतियोगी परीक्षा के लिए	65	26
3	समाचार पत्र –पत्रिकाएं पढ़ने के लिए	40	16
4	इंटरनेट सुविधा के लिए	55	22
	कुल योग	**250**	**100**

सारणी संख्या 02 के अनुसार स्पष्ट होता है कि कुल 250 उत्तरदाताओं में से पाठ्यक्रम के लिए 36% प्रतियोगी परीक्षा के लिए 26% समाचार पत्र – पत्रिकाओं के लिए 16% इंटरनेट सुविधाओं के लिए 22% सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता पुस्तकालय का उपयोग पाठ्यक्रम सम्बंधित पुस्तकों के उद्देश्य से करते हैं।

सारणी संख्या – 03

पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों के संदर्भ में

क्र. स.	**विवरण**	**आवृत्ति**	**प्रतिशत**
1	हां	225	90
2	नहीं	25	10
	कुल योग	**250**	**100**

सारणी संख्या 03 के अनुसार स्पष्ट होता है कि कुल 250 उत्तरदाताओं में से 90% मानते हैं कि पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें उनकी आवश्यकताओं को पूर्ण करती है और 10% उत्तरदाताओं का मानना है कि पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें उनकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं करती है।

अतः सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं को पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें उनकी आवश्यकताओं को पूरा करती है।

सारणी संख्य – 04

पुस्तकालय समय से खुलने के संदर्भ में

क्र. स.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हां	230	92
2	नहीं	20	08
	कुल योग	**250**	**100**

सारणी संख्या 04 के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कुल 250 उत्तरदाताओं में से 92% पुस्तकालय समय से खुलने पर सहमत हैं तथा 08% उत्तरदाताओं का मानना है कि वह पुस्तकालय खुलने के समय से असहमत इस। सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकतर उत्तरदाता पुस्तकालय खुलने के समय से सहमत हैं।

सारणी संख्या – 05

उत्तरदाताओं के पुस्तकालय सेवाओं की संतुष्टि के संदर्भ में –

क्र. स.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	उदार सेवाएं	125	50
2	कॉपी सेवाएं	30	12
	पुस्तकालय इंटरनेट सेवाए	95	38
	कुल योग	**250**	**100**

सारणी संख्या 05 के अनुसार ज्ञात होता है कि कुल 250 उत्तरदाताओं में से 50% उदार सेवाओं 12% कॉपी सेवाओं तथा 38% पुस्तकालय इंटरनेट सेवाओं से संतुष्ट हैं।

अतः सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकांश उत्तरदाता उदार सेवाओं से संतुष्ट हैं।

सारणी संख्या – 6

पुस्तकालय शोध कार्यों के लिए उपयोगिता के संदर्भ में –

क्र. स.	विवरण	आवृत्ति	प्रतिशत

1	बहुत उपयोगी	190	76
2	कुछ हद तक	50	20
	कहा नहीं जा सकता	10	04
	कुल योग	**250**	**100**

सारणी संख्या 06 के अनुसार ज्ञात होता है कि कुल 250 उत्तरदाताओं में से 76% उतरदाता पुस्तकालय शोध कार्यों के लिए बहुत उपयोगी मानते हैं, 20% उतरदाता कुछ हद तक उपयोगी मानते हैं तथा 04% उतरदाता के अनुसार 04 उतरदाता के अनुसार कहा नहीं जा सकता है।

अतः सारणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं का मानना है कि पुस्तकालय शोध कार्यों के लिए बहुत उपयोगी है।

निष्कर्ष – महाविद्यालय पुस्तकालय सेवाओं व सुविधाओं के प्रति छात्र –छात्राओं के दृष्टिकोण पर आधारित इस सर्वेक्षण से यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता छात्र पुस्तकालय आने में अधिक रुचि रखते हैं। पुस्तकालय का उपयोग पाठ्य सामग्री प्राप्त करने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी और अध्ययन कार्य हेतु शांत वातावरण के लिए करते हैं अधिकांश उत्तरदाता छात्रों का मानना है कि पुस्तकालय में आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध हैं लेकिन कुछ उतरदाता छात्रों को पुस्तकालय में शोध कार्य हेतु आई एस बी एन पुस्तकें शोध प्रबंध एवं जर्नल्स की आवश्यकता महसूस होती। अधिकांश उत्तरदाता छात्रों का मानना है कि पुस्तकालय कर्मचारियों को मृदुभाषी शांत एवं सहयोगी हैं ।

दुर्गम क्षेत्र होने के क कारण भी सर्वाधिक उत्तरदाताओं के अनुसार अध्ययन के लिए. बुनियादी सुविधाएं (जैसे – कुर्सी मेज रोशनी आदि)

संभावनाएं –

शोधकर्ता को वर्तमान में निम्नलिखित महसूस हुई है जैसे –

1– शोध करने वाले छात्रों के लिए थिसिस, जर्नल्स तथा ई– बुक्स की सुविधा हो तो यहां की अध्ययन गुणवत्ता को बढाया जा सकता है।

2– महाविद्यालय पुस्तकालय का अपना लाइब्रेरी पोर्टल होना चाहिए ताकि छात्रों को अध्ययन सामग्री आसानी से उपलब्ध हो सकें।

संदर्भ–

1. शर्मा, बी0 के0 ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान, वाई0 के0 पब्लिशर्स आगरा, पृष्ठ संख्या –03
2. सैनी, ओम् प्रकाश, ग्रंथालय एवं समाज ' वाई0 के0 पब्लिशर्स आगरा पृष्ठ संख्या 142
3. वर्मा, राजकुमार लाइब्रेरी एण्ड इंफोर्मेशन साइंस पब्लिशर्स पी0 एण्ड पी0 एकेडमी गाजियाबाद, पृष्ठ संख्या – 72
4. शर्मा एस0 के0 पुस्तकालय और समाज ग्रंथ अकादमी नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 56
5. शर्मा बी0 के0 'ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान 'वाई0 के0 पब्लिशर्स , आगरा, पृष्ठ संख्या – 21